S.L. Paper

छंद

दोहा → तेरह मत्ता पढम पअ, पुणु एआरह देह।
पुणु तेरह एआरहइ दोहा लक्खणा एह॥
प्रथम-चरण में तेरह मात्रा फिर (द्वितीय चरण में) ग्यारह मात्रा दे फिर (तीसरे-चौथे-चरण में) क्रमशः तेरह और ग्यारह मात्रा दे। यह दोहा छंद का लक्षण है। दोहा विषम मात्रिक छंद है। इसकी मात्राएँ 13, 11, 13, 11 हैं।

जहा— सुरअरु सुरही परसमणि, णहि वीदेश समाण।
ओ वक्कल ओ कढिणतणु ओ पसु ओ पासाण॥
अर्थात सुरतरु (कल्पवृक्ष) सुरभि (कामधेनु) स्पर्श मणि ये तीनों वीरेश (राजा) के समान नहीं हैं यह (कल्पवृक्ष) तो लकड़ी तथा कठोर शरीर का है वह (सुरभि) पशु है, तथा वह (स्पर्शमणि) पत्थर है।

गाथा → पढमं बारह मत्ता बीए अट्ठारहेहिं संजुत्ता।
अह पढमं तह तीअं दह पंच विहूसिआ गाहा॥
गाथा के प्रथम चरण में 12 मात्रा होती है दूसरे में वह 12 मात्राओं से युक्त होती है। तीसरे चरण में प्रथम-चरण की ही तरह (तेरह मात्राएं) होती है बाकी (चतुर्थ) चरण में गाथा 15 मात्रा से विभूषित होती है

जहा— जेण विणा ण जिविज्जइ अणुणिज्जइ सो कआगरा हो वि।
पत्ते वि णअरडाहे भण कस्स ण वल्लहो अग्गी॥
अर्थात कोई कलहांतरिता नायक को बुलाने के लिए सखी को भेजते समय कह रही है जिसके बिना जिन्दा नहीं रहा जा सकता, वह कृतापराध होने पर भी मनाया ही जाता है। बताओ तो सही ऐसा कौन होगा जो नगर में आग लगने पर भी आग को नहीं चाहता।

अनुष्टुप → श्लोके षष्ठं गुरु-ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥
अर्थात जिसके प्रथम और तृतीय चरण में सप्तम वर्ण लघु हो तथा चारों चरणों में छठा अक्षर गुरु तथा पाँचवा लघु हो उसे अनुष्टुप छंद कहते हैं।

Scanned with CamScanner

अन्धआले पलाअन्ती मल्लगन्धेण सूरुदा।
जहा— केशविन्दे पलामिद्धा चाणक्केणव्व दोवदी॥

अर्थात अंधकार से भागती हुई माला के गंध से संचित वसन्तसेना मेरे द्वारा इस प्रकार केशों से पकड़ ली गई जैसे चाणक्य के द्वारा द्रौपदी।

शिखरिणी छंद → रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलगा शिखरिणी।

(शिखरिणी) प्रत्येक चरण में यदि क्रम से एक यगण और एक मगण तथा एक नगण एवं एक सगण और एक भगण तथा एक लघु एवं एक गुरु हो तो उसे शिखरिणी छंद कहा जाता है छः और ग्यारह पर यति होती है।

(रसैः षड्भी रुद्रैरेकादशभिश्छिन्ना यतिमती)

जैसे → भवेद् गोष्ठीयानं न च विषमशीलैरधिगतं।
वधूसंमानं वा तदभिगमनोपस्थितमिदम।
बहिर्नेतव्य वा प्रवरजनयोग्यं विधिवशा।
द्विविकल्पा चिन्त्यं मम खलु भवेद्वैव विहितम्॥

द्रुतविलम्बित छंद —

अयि कृशोदरि भश्चतुर्थकं गुरु च सप्तमकं दशमं तथा।
विरतिगं च तथैव विचक्षणैः द्रुतविलम्बितमित्यकरि स्मृते

अर्थात हे कृशोदरी! यदि जहाँ पर चतुर्थ सप्तमी, दशमी तथा वैसे ही अन्तम बारहवां वर्ण गुरु होता तथा प्रथम में लघु-लघु, द्वितीय में लघु, गुरु, लघु तृतीया में गुरु लघु होता है। वैसे छंद को विद्वान लोग द्रुतविलम्बित कहते हैं। उसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर नगण, भगण, भगण और रगण होते हैं।